पाठ - 1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कठिन शब्द

1. उन्मुक्त
2. पुलकित
3. कटुक
4. निबौरी
5. स्वर्ण
6. श्रृंखला
7. तरु
8. फुनगी
9. क्षितिज
10. आश्रय
11. विघ्न
12. छिन्न - भिन्न

पाठ - 1

शब्दार्थ

1 पंछी - पक्षी

2 उन्मुक्त - आजाद

3 गगन - आसमान

4 पिंजरबद्ध - पिंजरे में बंद

5 कनक - सोने की

6 तीलियाँ - सलाखें

7 पुलकित - कोमल

8 कटुक - कड़वी

9 नीड़ - घोंसला

10 आश्रय - सहारा

Date
3/7/2020

प्रश्नोत्तर

प्र.1 हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?

उत्तर पक्षी के पास वो सारी सुख सुविधाएँ है, जो उनके जीवन के लिए आवश्यक है। परन्तु वह स्वतंत्रता नहीं है, जो उन्हें प्रिय है। वे इस खुले आकाश में आजादीपूर्वक उड़ना चाहते है। इस प्रकार की उड़ान उनमें नई उमंग व प्रसन्नता भर देती है। जो पिंजरे की सुख सुविधाएँ नहीं दे सकती है। इसलिए हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते है।

प्र.2 पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते है?

उत्तर पक्षी उन्मुक्त रहकर जंगल की कड़वी निबौरी खाना चाहते है। प्रकृति के सुन्दर रूप का आनंद लेना चाहते है, खुले नीले आकाश में उन्मुक्त उड़ान भरना चाहते है, वे नदियों का शीतल जल पीना चाहते है वे तो क्षितिज के अन्त तक उड़कर जाना चाहते है। इसके लिए उनको अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं है।

प्र.3 भाव स्पष्ट कीजिए -
या तो क्षितिज मिलन बन जाता। या तनती साँसों की डोरी।

उत्तर क्षितिज का अर्थ है जहाँ धरती आकाश मिलते है और पक्षी क्षितिज के अन्त तक जाने की लालसा रखते है फिर चाहे उन्हें किसी भी स्थिति का सामना करना पड़े। वे चाहते है या तो आज वह क्षितिज का अन्तिम छोर ही प्राप्त कर ले अन्यथा अपने प्राणों को न्योछावर कर दे

Date 6/7/2020

पाठ - 1

सप्रसंग व्याख्या

1 हम पंछी उन्मुक्त . . . . . . पंख टूट जाएंगे।

अर्थ प्रस्तुत कविता में कवि यह बताना चाह रहा है कि पक्षियों को अपनी स्वतंत्रता बहुत प्रिय है। उन्हें पिंजरे में बंद कर दिया गया तो वे अपना गाना नहीं गा पाएंगे। पंछी यह कहना चाहते है कि चाहे हमारा पिंजरा सोने का ही क्यों न बना हो इन सोने की तीलियों से टकरा कर हमारे पंख टूट जाएंगे।

2. हम बहता जल . . . . कटोरी की मैदा से।

अर्थ हमें तो बहता जल पसंद है। हम भूख-प्यास से मर जाएंगे भले ही सोने की कटोरी में ही हमें भोजन दिया जाय पर उस भोजन से ज्यादा कड़वी निंबौली जो पेड़ों पर लगती है वो हमें अच्छी लगती है।

3. स्वर्ण-श्रृंखला के . . . . . फुनगी पर के झूले।

उत्तर आपने पक्षियों को उड़ते देखा होगा, जब पंछी उड़ते है तो ऊँची डाल पर झूलते है। अर्थात् भले ही सोने की जंजीरें डाल दो एक तरह से हमारे लिए तो बंधन है। हम अपनी गति और उड़ान भूल गए है। अब पेड़ों की ऊँची डाल पर झूला-झूलना तो हम सपनों में ही देख रहे है।

4. ऐसे थे अरमान . . . . अनार के दाने।

उत्तर पंछी की यह इच्छा बताई है कि हम भी आकाश की नीली सीमा तक उड़ते जाएं। क्या कहते है सूर्य के किरणों जैसी लाल चोंच खोलकर तारक रुपी अनार दाने चुगने की हमारी इच्छा है।

होती सीमाहीन . . . . साँसों की डोरी।

इसमें कवि ने बताया है पंछी अपने पंखों की दौड़ लगाकर सीमाहीन क्षितिज तक उड़ना चाहते है। क्षितिज की कोई सीमा नहीं है।

वे या तो क्षितिज तक पहुँच जाएंगे या फिर उनकी मृत्यु हो जाएगी।

नीड़ न दो . . . . . . विघ्न न डालो।

उत्तर कवि कहता है पंछी कह रहा है कि भले ही तुम टहनी पर अपना घोसला मत बनाने दो। और हमारे आसरे को तोड़ डालो। लेकिन पंख दिए हैं तो हमारी उड़ान में विघ्न मत डालो।

भाषा की बात अभ्यास कार्य

गुणवाचक विशेषण :

1 स्वर्ण श्रृंखला

2 लाल किरण

3 पुलकित पंख

4 कड़वी निबौरी

5 उन्मुक्त गगन

6 ~~मूंगे और प्यारे~~

* भूखे-प्यासे में द्वन्द समास है- जैसे .

1 भूखे और प्यासे

2. सुख और दुख

3. धूप और छाँव

4. खाते और पीते

5 रात और दिन

6 पाप और पुण्य